भारत सरकार
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 4386
02.04.2026 को उत्तर के लिए

प्रमुख पर्वत श्रृंखलाओं की परिभाषा और सीमांकन

4386. श्री प्रकाश चिक बाराईक :

क्या **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

क्या देश में प्रमुख पर्वत श्रृंखलाओं के लिए कोई परिभाषा अथवा अधिसूचित सीमा निर्धारित की गई है?

उत्तर

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री :
(श्री कीर्तवर्धन सिंह)

किसी प्रमुख पर्वत श्रृंखला को परिभाषित करने या उसकी सीमाओं को अधिसूचित करने का विषय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता है। इसके अलावा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के तहत भारतीय सर्वेक्षण द्वारा प्रदान की गई सूचना के अनुसार, भारत में प्रमुख पर्वत श्रृंखलाओं के लिए कोई परिभाषा या अधिसूचित सीमा की जानकारी उनके पास उपलब्ध नहीं है। खान मंत्रालय के अधीन भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) ने भी सूचित किया है कि यह विषय वस्तु जीएसआई के दायरे में नहीं आती है।

इसके अलावा, हिमालयी श्रृंखला के संबंध में, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के अधीन वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान (डब्ल्यूआईएचजी), देहरादून ने सूचित किया है कि भारत की उत्तरी सीमा लगभग 2,400 किलोमीटर लंबी हिमालय पर्वत श्रृंखला द्वारा परिभाषित की गई है, जो पश्चिम-उत्तर पश्चिम से पूर्व-दक्षिण पूर्व की ओर जाती है। यह श्रृंखला पांच देशों में फैली हुई हैः नेपाल, भारत, चीन, भूटान और पाकिस्तान। यह उत्तर-पश्चिम में काराकोरम और हिंदू कुश पर्वतमाला से, उत्तर में तिब्बती पठार से और दक्षिण में भारत-गंगा के मैदान से घिरी हुई है। इसके अलावा, डॉ. केएस वालदिया, जो एक प्रतिष्ठित भारतीय भूवैज्ञानिक हैं, ने हिमालय को उत्तर से दक्षिण तक अलग-अलग टेकटोनिक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है, अर्थात् टेथियन हिमालय, ग्रेटर (या उच्च) हिमालय, लेसर हिमालय और सब-हिमालयन (या शिवालिक) श्रृंखला। भूविज्ञान में, हिमालय पर्वत श्रृंखला को उत्तर में सिंधु-सांगपो सूचर, पश्चिम में बाएं-स्लिप चमन फॉल्ट, पूर्व में दाएं-स्लिप सागाइंग फॉल्ट और दक्षिण में मुख्य फ्रंटल थ्रस्ट (एमएफटी) द्वारा विवर्तनिक रूप से परिभाषित किया गया है।

*****